Shrimad Rajchandra Mission
Dharampur

महात्मा गांधी के आध्यात्मिक मार्गदर्शक श्रीमद् राजचन्द्र जी के सम्मान में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने किया सिक्के और स्टाम्प का विमोचन

श्रीमद् राजचन्द्र जी की 150वीं जन्मजयंती के अवसर पर अहमदाबाद में श्रीमद् राजचन्द्र मिशन धरमपुर के संस्थापक पूज्य गुरूदेव श्री राकेशभाई, गुजरात के माननीय राज्यपाल श्री ओम प्रकाश कोहली, गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री श्री विजय रूपानी तथा अन्य गणमान्य अधिकारियों और दिग्गजों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई

प्रेस विज्ञप्ति **अहमदाबाद, गुरूवार, जून 29, 2017**

2017 में हम महान संत एवं आध्यात्मिक दिग्गज श्रीमद् राजचन्द्रजी (1867–1901) की 150 वीं जन्मजयंती मना रहे हैं। महात्मा गांधी के आध्यात्मिक मार्गदर्शक श्रीमद् राजचन्द्र जी के आध्यात्मिक मार्गदर्शन तथा प्रत्यक्ष समागम के कारण राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जीवन में सम्पूर्ण रूपान्तरण आया और उन पर ज़बरदस्त, रचनात्मक प्रभाव पड़ा।

''मैं उनके जीवन और उनकी रचनाओं के सम्बन्ध में जितना विचार करता हूँ, उतना ही मुझे लगता है कि वे अपने युग के सर्वश्रेष्ठ भारतीय थे।''
–महात्मा गांधी, श्री एच.एस.एल. पोलक को लिखे हुए पत्र में से, अप्रैल 26, 1909

मैं अपने आध्यात्मिक संकट के समय, उनका आश्रय लिया करता था।''
–महात्मा गांधी– सत्य के प्रयोग (प्रकरण– राजचन्द्रभाई)

गणमान्य सरकारी अधिकारियों, विशेष अतिथियों, विभिन्न संगठनों के प्रमुखों की मौजूदगी में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने केन्द्र सरकार द्वारा जारी – डेढ़ सौ रुपए और दस रुपए के दो सिक्कों के शुभारम्भ के साथ महात्मा के महात्मा श्रीमद् राजचन्द्रजी को गौरवपूर्ण श्रृद्धांजली दी। साथ ही डाक विभाग द्वारा जारी पांच रुपए की डाक टिकट, पहले दिन का कवर, पहले दिन के कैन्सिल्ड कवर का भी शुभारम्भ किया गया।

सिक्कों पर श्रीमद् जी के चित्र के साथ उत्कीर्ण किया गया है– 'श्रीमद् राजचन्द्र' '150वीं जन्मजयंती' और साल '1867' एवं '1901'। दस रु का सिक्का और स्टाम्प देश में सामान्य व्यापारिक प्रचलन में रहेगा, जबकि डेढ़ सौ रुपए का सिक्का आम जनता के लिए स्मारिका की भूमिका निभाएगा। इस संदर्भ में नई दिल्ली में 24 जून को एक आधिकारिक राजपत्र अधिसूचना जारी की गई है।

इस प्रतिष्ठित कार्यक्रम में देश भर से विभिन्न श्रीमद् राजचन्द्र संगठन जैसे श्रीमद् राजचन्द्र आध्यात्मिक साधना केन्द्र–कोबा, श्रीमद् राजचन्द्र निजाभ्यास मंडप और विहार भवन ट्रस्ट–अहमदाबाद, वडवा और इडर, श्री राज सौभाग आश्रम–सायला, श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम साधना केन्द्र– कुकमा, श्री मद् राजचन्द्र आश्रम–पाटन आदि मौजूद थे।

समारोह की शुरूआत भारत के 70 वें स्वतन्त्रता दिवस के मौके पर ही हो गई थी जब माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने लाल किले पर भाषण देते हुए कहा, *''देश महात्मा गांधी के गुरू श्रीमद् राजचन्द्र जी की 150 वीं जन्मजयंती मना रहा है। गांधीजी को लिखे गए एक पत्र में श्रीमद् जी ने कहा था––––– अहिंसा का अस्तित्व हिंसा के अस्तित्व के साथ ही बना हुआ है। महत्वपूर्ण यह है कि हम मानवमात्र के कल्याण के लिए इनमें से किसका इस्तेमाल करते हैं।''*

श्रीमद् राजचन्द्र जी के आध्यात्मिक जीवन मूल्यों तथा अहिंसा और सत्य के सिद्धान्तों को दुनिया भर में लोगों तक पहुंचाना ताकि उनके जीवन में आमूल रूपान्तरण हो, यह श्रीमद् राजचन्द्र मिशन धरमपुर का मुख्य उद्देश्य है।

गांधीजी पर श्रीमद् जी के प्रभावों के बारे में विस्तार के बताते हुए श्रीमद् राजचन्द्र मिशन धरमपुर के प्रमुख श्री अभय जसानी ने कहा, *''श्रीमद् राजचन्द्र का हमारे राष्ट्रपिता पर ज़बरदस्त और रचनात्मक प्रभाव पड़ा। गांधीजी की श्रीमद् जी से पहली मुलाकात मुम्बई में हुई, जब वे 1891 में बैरिस्टर के रूप में इंगलैण्ड से लौटे थे। श्रीमद् जी की आंतरिक समतलता, आध्यात्मिक गतिविधियों में अवशोषण, प्रबुद्ध ज्ञान, शास्त्रों के ज्ञान और नैतिक ईमानदारी ने गांधी जी पर गहरी छाप छोड़ी।''*

''मुम्बई में श्रीमद् राजचन्द्र जी के प्रत्यक्ष समागम में गांधी जी ने दो साल बिताए, इस अवधि में इन दोनों के बीच लम्बा वार्तालाप होता, इस कारण उनके बीच एक आत्मीय सम्बन्ध स्थापित हुआ। तत्पश्चात् दक्षिण अफ्रीका पहुंचने पर गांधी जी पत्रों के माध्यम से उनके सम्पर्क में बने रहे। श्रीमद् जी के आध्यात्मिक विचारों ने गांधी जी के मन में आध्यात्मिक जिज्ञासा की अग्नि प्रज्जवलित की। उनके घनिष्ठ सम्बन्धों ने गांधी जी के नैतिक आचरण को नया आकार दिया। श्रीमद् जी के सत्य, अहिंसा और धर्म के सिद्धान्त बाद में गांधीवाद के मौलिक सिद्धान्त बन गए।'' उन्होंने अपनी बात को जारी रखते हुए कहा।

श्रीमद् राजचन्द्र जी आध्यात्मिकता की तीव्र एवं निरंतर खोज का संयोजन हैं। शुद्ध ज्ञान, निष्काम भक्ति और अन्तर्मुखता के प्रतीक श्रीमद्जी ने 23 साल की उम्र में आत्म–ज्ञान प्राप्त किया। श्रीमद् जी की निष्कारण करूणा के फलस्वरूप उनके द्वारा एक उत्कृष्ट आध्यात्मिक कृति श्री आत्मसिद्धि शास्त्र की रचना हुई जिसका दार्शनिक जगत में एक अजोड़ स्थान है। उनकी शिक्षाओं को एक अमूल्य संस्करण और संकलन 'श्रीमद् राजचन्द्र' नामक ग्रंथ में प्रकाशित किया गया है, जो अनेक मुमुक्षु तथा सत्य की खोज करने वाले जिज्ञासुओं की पिपासा शांत करती है। दुनिया भर में श्रीमद् जी को समर्पित आश्रमों, मंदिरों और संस्थानों के माध्यम से लाखों श्रृद्धालु उनकी शिक्षाओं से लाभान्वित हो रहें हैं और आध्यात्मिक मार्ग पर अग्रसर हैं।

श्रीमद् राजचन्द्र मिशन धरमपुर के संस्थापक, पूज्य गुरूदेव श्री राकेश भाई श्रीमद् राजचन्द्र मिशन धरमपुर के पथप्रदर्शक हैं। वे आध्यात्मिक दूरदृष्टा होने के साथ–साथ आधुनिक रहस्यवादी भी हैं। वे अपने प्रबुद्ध व्याख्यानों के माध्यम से दुनिया भर में हज़ारों लोगों के जीवन को रुपान्तरित कर रहे हैं। उनके मार्गदर्शन के अंतर्गत श्रीमद् राजचन्द्र मिशन धरमपुर समाज के वंचित और ज़रूरतमंद समुदायों के उत्थान में निष्काम सेवा द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

श्रीमद् राजचन्द्र जी की 150 वीं जन्मजयंती वर्ष के भव्य अवसर पर श्रीमद् राजचन्द्र मिशन धरमपुर ने एक वर्षीय समारोह का आयोजन किया है। इसी समारोह के तहत श्रीमद् राजचन्द्र मिशन धरमपुर प्रस्तुत कर रहा है एक अद्भुत नाट्प्रयोग– ''युगपुरुष– महात्मा के महात्मा''। एक प्रेरणादायक नाटक जो श्रीमद्जी एवं

गांधीजी के बीच के आध्यात्मिक सम्बन्धों पर प्रकाश डालता है। 225 दिनों में 630 से अधिक शो पूरे करने के बाद यह सफलता की सभी सीढ़ियों को पार कर गया है और दुनिया भर के 220 शहरों के 4,30,000 से ज़्यादा लोगों तक पहुंच चुका है। वर्तमान में नाटक को 5 भाषाओं में पेश किया जा रहा है– गुजराती, हिंदी, कन्नड, मराठी, बंगाली तथा दो भाषाओं तमिल और अंग्रेज़ी में इसे तैयार किया जा रहा है।

अन्य पहलों में शामिल हैं:

- श्रीमद् राजचन्द्र अस्पताल का निर्माण– दक्षिणी गुजरात में ज़रूरतमंद एवं गरीबों के लिए नया 200 बैड्स से युक्त मल्टी–स्पेशलटी चैरिटी अस्पताल। गुजरात के वलसाड जिले की ग्रामीण आबादी राज्य के सबसे गरीब वर्ग में से है जो गरीबी, कुपोषण, निरक्षरता, स्वास्थ्य सेवाओं की कमी से जूझ रही है, जिसके चलते यह स्वास्थ्य सम्बन्धी कई समस्याओ का शिकार है।
- श्रीमद् राजचन्द्र शैक्षणिक सामग्री वितरण– एक पहल जिसके माध्यम से गुजरात के ग्रामीण बच्चों को रियायती दरों पर नोटबुक्स और स्टेशनरी की सामग्री वितरित की जाती है, इससे अब तक 1.2 लाख से ज़्यादा परिवार लाभान्वित हो चुके हैं।
- कांसे से बनी श्रीमद् राजचन्द्र जी की 34 फीट ऊँची प्रतिमा की स्थापना, जो दुनिया में श्रीमद् राजचन्द्र जी की सबसे बड़ी प्रतिमा है।
- श्रीमद् राजचन्द्र जी की समृति में सड़कों और चौक का नाम
- एक सक्रिय इंटरैक्टिव यात्रा प्रदर्शनी जिसमें श्रीमद् राजचन्द्रजी के सशक्त जीवन, रचनाओं और शिक्षाओं का प्रदर्शन किया गया है।

श्रीमद् राजचन्द्र मिशन धरमपुर के बारे में

श्रीमद् राजचन्द्र मिशन धरमपुर एक विश्वस्तरीय आंदोलन है जो समाज के आध्यात्मिक विकास के लिए प्रयासरत है। श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम, धरमपुर में अन्तरराष्ट्रीय मुख्यालय के साथ मिशन के 102 से ज़्यादा सत्संग केन्द्र, 39 यूथ ग्रुप और 227 डिवाइन टच सेंटर हैं। यह उत्तरी अमेरिका, यूरोप, एशिया, अफ्रीका, और ऑस्ट्रेलिया में बच्चों के लिए नैतिक शिक्षा एवं आत्म–विकास के कार्यक्रम प्रस्तुत करता है। श्री मद् राजचन्द्र मिशन धरमपुर 'स्वयं के सत्य–स्वरूप को पहचानों और अन्य की निष्काम सेवा करों इस मिशन स्टेटमेन्ट को चरितार्थ करता हुआ सार्वभौमिक उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

श्रीमद् राजचन्द्र लव एण्ड केयर – श्रीमद् राजचन्द्रमिशन धरमपुर की एक पहल है जो दुनिया भर के 50 शहरों में 2.3 मिलियन लोगों के जीवन को प्रभावित कर चुकी है इनमें से ज़्यादातर भारत के अभावग्रस्त, गरीब, ग्रामीण हैं।

For further information please contact Alpa Gandhi at:
Mobile: +91 93222 41513
Email: publicrelations@shrimadrajchandramission.org